

स्वामी गुरु सदा श्री

३३ श्री गुरु गुरु गुरु गुरु

गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु

गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु

गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु

गुरु गुरु

गुरु गुरु

गुरु गुरु

गुरु गुरु

गंगादयनमानमः
श्री.वासुदेवाय

१ स्वस्ति श्री गिरि। ज च के सुडा मर

वि १२५० वसीचर

१५५०

१५५०

श्री साधना ॥ श्री ३ गणेशाय नमः ॥

१ गणः स्मरः ॥ वंदे हर नन्द चै नमः पितृ नरु ख हारिः

भक्तपाल गिरिशाला लस्ये लशिषरवासिः ॥ ध्रु ॥ चि

वचनपति प्रेम वार ग्रंथे नाग हारि ॥ चतुर्वीरु पर सुदंत

विजय नवरकुं जलमुख चन्दु खन्द

गव्यरत नित्य नत नसारि ॥ २ ॥

धनास कारि ॥ काले दास विपु

॥ ५० ॥

शम नाम जपने को चित धर

॥ ध्रु ॥ साधु से भक्तो धीरै

को चित धरै ॥ ५१ ॥

शान धरै ॥ ५२ ॥

के मये

४

५

राग

सह्य

मेक

श्री गंगा

श्री कृष्ण

जिनके ॥ ३ ॥

कंदे ॥ जिनके

ॐ रागत फाः॥ले चलो था कुर को दर वार दु नि जाः॥ ५॥ कोहि
 नहि मेरा साठ दु नि जाः फिर धीरे से चरना पाय कटाई जा
 कोही नहि मे साठ दु नि जाः॥ ॥ वरी ये क जि उ ना ये क
 वरी रघु ना थ दु नि जाः॥ २॥ २ २ २ २

रागत फाः॥ वद न वं सि वा जि हो नि द स द ति ग ये मे रा से जाः
 ये क वे दि रि मो रे सा सु न दि दो स रे वै रि मो रे वा जि रेः॥ ॥ ॥

राग श्रीः॥ कहत पुरा द पि ता सो मे रे रं म आ चारः अ गा दु व गा दु
 पि टि का जो म धी से तो य धी रं म न मः वि नु ह रि न ज न वि नु मु
 नि न हो ई का हे वि श रा वै रा तः॥ क ॥ ॥ वे द स धा ई के पं दि
 त था के क रि मे नृ प ति सो जा ई ॥ २ ॥ ये क त ना व च न
 रि ह रि नं कु श के ये वा धे ख म त न गा ईः ख ड ग नि का लि ह
 नं कु श पूं डे का हं हो ते रि रा म व ता उः॥ ३ ॥ रा स ना म
 रि का मु रे हो अं धो पि ता तो हिं से मा हि मे रा द्र खं व मे उ
 ठ ल व्या पि त रा मः॥ ४ ॥ न र ह रि रू प भ ई हो न ह रि ए ग
 यारि ह रि नं कु श न य द न रि सु र कि स हा रा म ॥

2769

सगङ्गीः ॥ १ ॥ भागिरथिविन्द
नामवखनि, गङ्गासागर संगमहोयैरे ॥ २ ॥
नकर निः अन्तनामगंगा कि साहातमरे ॥ ३ ॥
इकर जोरि विनतिः भगतकिदरशजदे हो, गंगा माई ॥ ३ ॥

१०. रागनिगुं ॥ निरषत जाइत जाइ ईर थपर निरषत जात
जटाई हो ॥ ५५ ॥ सरजु कोतिर मे भ्रजु चानगरि दशरठ
सुतर दुराई होः जाकेतिरिया नामे रे शीता हर नीशाठल
गाइ हो ॥ ५६ ॥ अगनिवान चले हो निशा चर दो नो पंक
जलाई होः रावत माये मा हा जु चकि येर थ मेरे कदुराई
हो ॥ ५७ ॥ सहिवाल पद्मव पन्दि त होये क चादुद पिलाई
हो. क चादुद पिलाइर माता कर्म ह माग माई हो ॥ ५८ ॥
वज्रायु पन्दि प्राण चर लोहें सब पंदि ॥ सब देवताये
दे पाईः सब पंदि तेरा मरा म कह के भुमि परे बडुराई हो ॥ ५९ ॥
हात से ले के थडु जलायां गरुड बाह भयाई हो चतुर्ची
कुरूप हो के बैकुण्ठ आभा पाई हो ॥ ६० ॥ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ॥

११ एगजोश्वा ॥ ॥ निरदई सें पितकठिन करे: घर जाउ तो त्राजु

११ एग जो आ ॥ ॥ निरदई सें प्रित कठिन करे: घर जाउ तो लाजु
रहे नरहे मे प्यो ॥ ये क मूति के माल परि गयो मे. ये क कां
च कि माल भई न भई ॥ १ ॥ दधि मो ए मा घन चा घ तोरे
दधि मो ए चा जुरहे नरहे ॥ २ ॥ वारि भूखन सें अ चल
उम दूर करे: जै शि स्या म दटा जुरहे नरहे ॥ ३ ॥

स ॥ ॥ ॥

१२ एग ॥ ॥ अ व का जग मे भुरह: ना दिल सै दिल समुझाई ॥ प्य
मनि मय क गुरु आ म सु मरले. आ फे गुरु का पाउ ना हो ॥
॥ ते ए सिर पर काल खरा ह्ये. छ व दिन पर वन. वे ल
हो ॥ २ ॥ कह ए क वीर कु नो भाइ आ धु हरि का ए
म सु मरना हो ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३

१३ एग तफा ॥ मोरे वं गालि. वं गालि. वं गालि. वं गालि
गारि ॥ प्य ॥ दा दि पा. चाउ दि मा. दा दि पा. चाउ दि मा
द मा दा ल द ल द ल. मोरे वं

स्वस्ति श्रीगिरि रजत कवेदा

विविध विरुडा वलिविर

विक्रम साहवहाद समेसर कस्य पत्रम आगे मरासु

विलेख तधा आलाई जागी रव कस्यो लह भेडाई

उडिके वाजु सिर्सि सा रिहा लहु कु म आठो प्रहर

जुभे सा लु सा मेलहु नृप ह अप ना जा गिर का आ

मडु नि ओपे भाग्य गर लेटर

स्वस्ति श्रीसर्वोपमा जागत्या दिसक लगु रागरि सु रज भा रा साम

थ ईत श्रीफलाना क फलाना को सेवा उ प्रान्त सह श्रु नाम द

वत फलानिक छ लहु स ला ग्या भा हा कु म लख न ते रे सो

भयो मे ते सो जो क

स्वस्ति श्री जई ममि निशर यान क मी दर द न वि फ जर न लजं क व ल

कुवर राज क सा न व म

नवा को

रगनिर्गुन ॥ ॥ अरे जोगिते तेरे सी रसनाहि पात्री ॥ कानसकुनडलिंग लेखइसा ला
॥ घर घर अलख जग आरे जोगिते सी रसनाहि पात्री ॥ ॥ हतलिसे धिये का
मे जो लिखे दस घर अलख जग आरे जोगिते तेरे सी रसनाहि पा
त्री ॥ २५ ॥

मे लो मे लो मे लो सा मे ते न चो ने मय जिरे मा मे लो मे लो मे लो ॥ काहे मा का
हे वुवा गोवा लित का या वु मे लो ॥ १॥

धने धने धने धने चची का लिका रग आर ॥ ॥ बंदे हरन दचरन मधि
लकरु महारि ॥ भक्त प्रालगिरि लाल से लसि घर वासि हरन दचरन ॥ १॥
विभुवन पति प्रमवार गले नाग हरि ॥ चतुर्की दुष सुद न मोद को धोरि
॥ बंदे हरन दचरन ॥ २॥ विनयेन वर कुंज लसुष चंद ख बज्वा लि ॥
रिधि सिद्धि मग धरत नित्य न तन सारि ॥ बंदे हरन दचरन ॥ ३॥ सर
वर मुनि किनर विष्णु ना सारि कारि ॥ कालिदास विप्र दुदु मम लुनु
दु काई ॥ बंदे हरन दचरन मगिल लकरु महारि बंदे हरन ॥ ४॥

यस श्री नवी प

खे स श्री स के

वो हाग ॥ पतक ठित भये ॥ लो गे दुष्य देना विरोगीः
पूत ॥ ५५ ॥ अश्वत्थ भरि भरि भोजे सोरे होति ज्ञाः चोलि ज्ञा
भये विदेहानि विरो ॥ १ ॥ उदी चलो च सुवा पोखा फिरयेः
वंशि गयो मेरा दिखवा ॥ २ ॥ २० ॥ २

१५ रागा ॥ नन्द किसोर वख भा नकि श्वरिः ॥ भोर मई दुहु खे
लेत कोरिः नन्द कि ॥ ५५ ॥

१६ राग निर्गु ॥ हास परे देखी लो ॥ गह मा रः समना सलेना
५५ ॥ यो दू द्यार ठे टा पां निटो रं टो र पिउना ॥ सकल पदु कि
सभा वन वैये समण सलेना हैं ॥ १ ॥ समना सकिलु त घहिरे जो
चोहें सो लुते ॥ अन्न काल पदु त दे गा प्रात जा गा दु ते सम ॥ २ ॥
समना सयली किसन को टा र वं चली या ॥ दया धर मकी
आल बना या जम का मो हर जित लिपे ॥ ३ ॥ आसा हे को
हा पुर न प्यार जिके तप सबु बने गा ॥ पुर न प्यार पिने हरि
का फेरी जन्म नही पावे गा ॥ ४ ॥ कागत कि से पतं ग माणा

मनरागी संसार ॥ ५ ॥ ॐ ५ ॥ ५ ॥ ५

सु। स्वस्ति श्री

१७ राग निरु ॥ अब तो औसर वाती गयो है क्या पदु लाना करे व
र ॥ ५५ ॥ ३ ॥ सो अये जिहो लेके भजन करने को कि पाकर एत
हि पो अये बाजा पनवी ते एत तर घेत भुने शंसार ॥ ५६ ॥ हु
महम प्यन दानव तोरे भाई भति जा कुल पतिवार दे ली दे
वा ना भये सग न मे। काम को च कि कुल वेह वार ॥ ५७ ॥ स
व श्रौंसिरने हराम के संत जना सो ते जि अनि मानः कर जो
रि कपत करत शिर ~~वे~~ ना प कह रिहर जन को एषो सार
न ॥ ५८ ॥ दे लो ने न पशारि जगत कि गे हर सौ एसि धाम नि जा
नूः लकि पति जग वा धिस गग डन कर दारो सिर गाव जारे।
अव ॥ ५९ ॥ ॐ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५

राग आर ॥ नित्ये नित्ये समन सबो लो रानु भाई हो ॥ ५९ ॥ दो प
ती कि धिर क गो न गज को द्यो पाई होः भग होई धम्य को
रि प्रकाद व चाई हो ॥ ६० ॥ ग्राह पकर हसि ए वं ~~५९~~ को को ग

120

[illegible]

टुरि चदरे. का कान्तेदि आठेरः कसेरि कर्म अशन त्वेखा मी
 तन्ये वात्ता कोहिरे मानु क्यावेशे ॥ १ ॥ शिसा जोरिवे अंगन
 लाया अनमदिमे वकसेरे मानु क्यावेशे ॥ २ ॥ सजहि सा
 न मोरे ठार नहि हे ॥ कैशे विधिउ तांरो पार मानु क्यावेशे ॥ ३ ॥
 ॥ सब श्री सर्वें यमा जो मतव दि लकल गुन गरि थला ज माभा

२९ * राग धातु ॥ कर स भ्राजि जु लोरे सरि रस कर ॥
॥ पृ ॥ वाल ख पा जन स श विते जु लो थ नी जि न भा ल ये
जि न स कु पारे ॥ १ ॥ जो भन था श ये नो नु ग ल स हि न ॥ २ ॥
ना वा ने हें स रि पा जि ॥ २ ॥ स न जि थि र स दु स भा ल पा
थे न जु लो ॥ आ व जि स ला ई न ॥ ३ ॥ ग ना वा न्ये ग ना ची ने
ब न्ये लो म सि पारे ल ख स दु पु सु लि पा ड थ ये डि ड न लो ॥ ४ ॥
वे र थ जि जो भ न ग ना पु तो थ सरि र कि पा की हि वि र द न
के नो ॥ ५ ॥ हु थु गु पा पा प नं चो न्ये सा लो दु पा यं भ तु स
पु पां ज ल थो ठा पा ॥ ६ ॥ द ॥ सा पा सो हु तो ल रो वे वा
न्ये ते लो टि र थ स च र्म क र्म पा ये वा ने ॥ ७ ॥ ॐ ॥

२२ एग चिगुन ॥ साहा देव के हे सुना पार के भी विजया मति
 दे हो ग सारन को ॥ ५५ ॥ रंज पट पि के रन ग स स्ये र ग
 जह सिको दत्त उरवार लिपे ॥ ५६ ॥ ललि का जपि वे र स
 को स करे ॥ श्री कां मिनि का स सो चारन को ॥ २ ॥
 भगु वा जपि वे भगु वा ई द ह्ये दे चु हं द को भाट उ र वा सी
 रन को ॥ ३ ॥ जोगी पा जपि वे जोग व्या न करे ॥ श्री
 कृष्ण को नाम सु चारन को ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ २

२३ राग का पि ॥ ५९ ॥ टे खो श्री चर खा मि पति म ग रो ना श वा
 रि वे ॥ ५९ ॥ ॥ क म ल कि ते न प द कि सो भा ॥
 सङ्ग लिपे लक्ष्मी वा सां गारे ॥ ६० ॥ गोकु ल हो पे कृष्ण रा
 व्या रु कु स नि ॥ व ज वं सि वा जे स्या म सें ॥ २ ॥ गा वटे
 हरि गु न स्या म कि ली ला ॥ कर म कि सो च न कि मे र
 हो ॥ ३ ॥ ॥ ॥

३

राग भन ॥ ६१ ॥ के पि ते रि क पि द मि मो रे रा ग म गि दे ॥ ५५ ॥

वेगा ॥ मन के दर विजय कवहु न छुटे रा
 वेगा ॥ २ ॥ जोगि जंगम ममवर संन्या
 वस साहे. सऊ मनिऊ सके स तेन प
 र सुरावेगा ॥ ३ ॥ येन जनमानसो ठी परे हे येन
 जनमावधावेगा: येन जमान पछुती जोगा जम
 के गोराखावेगा ॥ ४ ॥ हरि पचेट न हीर बेहे को रि
 परचेट न गावेगा. कोरि सुमेर न प्रान च ल्यो हे गरि
 गरि सोउ तेरे हेगा ॥ ५ ॥ उदि च ल्यो हे सा. प्रान दु ल्यो
 हे का पा के दसू दु ती जावेगा ॥ केहि जही त्या ईव रिजरि
 ग मोहे केहि का गा चुनि खावेगा ॥ ६ ॥ स्याम लिता ह
 रिदाश कहे हे. हरिरस अमृत पिनेगा ॥ चेट ना पुरुष ते
 चेट न निघोहे ॥ अमर पुरि जावेगा ॥ ७ ॥ ॐ ७ ॥

२७
 गगनसुति ॥ सिवशक्ति साह का लिदै ते शर्व नाशि ॥ १ ॥
 चण्ड मुरारि सी चण्ड नाम धारनी ॥ मन पाज के
 रिपे करिये देव मंत्र साई ॥ २ ॥ स्व असु सर्व द्वादि रत्न वी

जयानिती ॥ १ ॥ निसुम्भसुम्भ भंजिनि सुं भवर्प

जघातिनी ॥ ० ॥ निसुम्भसुम्भ भंजि निसुं नवप
जासिनी सिंघंके ऊपर च धिये ॥ निसुं भं दे नो दे दर्न ॥

२८ एगत्रसुति ॥ धं दे धं दे धं दे दुर्गे च रिगु कालिके ॥ १ ॥ वि
चनवतुकसेत्रपालमाहं कालभैरवं नीरुप पंचथ वज्रत
किमि किमि किमि किना चनं ॥ ० ॥ कोठि श्रुजते जरुपरक वनं सो
निटं सिंघवाहिनी दविद ॥ १ ॥ सख बाध्वारिनी ॥ २ ॥ ताल
जोतक मृदे ॥ सजिर जोजि निकं वाजि केः ननन ततत ॥ ३ ॥ श्री
धुं धुं पयय ध्विकिकिः ध्विकिकि नाचनं ॥ ३ ॥ श्री
जेंद्रु विन सशाहन देव जोप केः भगवति कि भावक
रत मोक्षे लोक पावके ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

लेनान्ना

श्रीरजेंद्र विन सशाहन देव हदुर

२८ एगत्रसुति ॥ १ ॥ शरन ते रिह मां प्रथम जोति ज्योत्स्ना ॥ १ ॥
कालिका पसन हेत रिची सिध्दि देनि तान सैन सुति
करत एके रजं मेरि ॥ ० ॥ ॥ ॥ ॥

राशा ॥ ३ ॥ ॥

३० राग पुर्वि ॥ सोरुने कर ना दया बहुरि जुरे ॥ १ ॥ कायेस
 पुरा माता मअ धरम अ लासि यमः ॥ पांयेस पुड श्वरि
 भजन ॥ हरि ॥ ० ॥ साया सोरु पाप संकेन योजि जालस ॥
 पास फेरि स दुद्धि विना हरि ॥ २ ॥ लो तो लेन ~~स म भा~~
 लया द्युत नम ला कन पावेर थनी जनु स द्यु पावे ॥ ३ ॥ हरि हरि
 सुमार न धरि धरि ति व स न पु न ज न म सु स्या ल नि दा न ॥ ४ ॥ लो व
 पंच परिशेन ना स का व ए स ना म ॥ आ स न जि वा न हरि हर ॥ ५

३१ राग सोरठ ॥ आरे जोगि तेरे सां ए स न हि पा नों ॥ १ ॥ का न मे कुं
 द लि ग ले रु दु मा ला धर धर अ ल ख ज गा ई ॥ ० ॥ हरे ल थि लि पे का
 ख मे फेरि रि पे ट श धर अ ल ख ज गा ई ॥ २ ॥

३२ राग गो पि गी टा ॥ पा नि नो भर न कै शो जां दू ट न न दो ज
 मु ना मे वा जि ग पो व थुरी ॥ १ ॥ ये क दू रि सारे दो श
 रा दू रि सारे रि श रा मे खो रि दि यो प दी ॥ सार ट सारो दू
 री का ट रि ना स व रं ग मि जो य दी ॥ २ ॥ शो आ वा ला व न
 रं ग सह ल कि वि च मे नै यो भ यो प करि ॥ ३ ॥ सा य श यी

बलोक जज्ञ भागरवा न्ग ॥ ३ ॥ पाप चारि लो क श वा न
 श पा प दु ख पा न्ग ॥ गुह्य कारि मु कु ति शर न्ग सो दो ली
 क था न्ग ॥ ४ ॥ विज रि कर ॥ त इ न्दु ल क्ष्मी वे हे जी ग
 सा यः का वि दा श सं ग पा ये त व सु दे स जा ई ॥ ५ ॥ ॥
 रा ग ॥ ॥ हे सा ई ये क ॥ ॥

३६ रा ग ॥ ॥ हे सा ई य क वा ला जी गि न न्द दारे आ या हो ॥
 पे क व च न सु नी न न्द रा नि कं च त ठ ल भ र पा हो ॥ मि
 सा लो जी गि रा यो स न को से रा गो पाल द रा पा हो ॥ १
 आ प व द्य व र उ प्यो व गं व र ना ग ग ले ल य रा पा हो
 मा थे वि रा जे ति ल ख च न्दु मा श ख र ज ता व चा पा हो ॥ २
 ज न्दु गे ते रि दो ल त दु नि पा न ल्यो गे ते रि सा पा से ॥ मि
 व ल ख को मु स ह दे षो द र सं न को व लि आ पा हो ॥ ३ ॥
 मि त र्से का ल ख लि मे न न्द रा नी स भु द र सं न पा पा हो
 पा च वे द प ये कर सा कर कर के सिं धि ना द व न्ग मा
 हो ॥ ४ ॥

॥

॥

॥

रा ग ॥ ॥ रा ग नं द रा ग स न्ग प द्य ना भ धा रि ॥ ६ ॥

३७

राग आर ॥ पाद ३ ॥ हरामनाथ पद्मनाभ धारि ॥ ५० ॥
 अ नन्न शैल विराजमान जोगमाया शंगहे ॥ आदि विज वेह
 अंस वह्ना होये श्रुति हो ॥ १ ॥ लक्ष्मी कार प्रेम कर तर
 धा कृष्ण कहये हो ॥ गोपाल जगतेश थ होये कालि मठ
 न कर नि हो ॥ २ ॥ सहस्र सुगोपिनि संग होये काला श्रु
 किये हो ॥ वह हा नि नैक सापि जिवन मोक्ष कर्नि ॥ ३ ॥ हरि
 हरण चरन क मने न गति मे का दिजे ॥ दाश कि ज्ये स
 रन नाठ हरि मुन गाई हो ॥ ४ ॥

३८

राग भजन ॥ ॥ जये गंगा धर करुना शागर कि पाकर त ह
 स तागे ॥ ५१ ॥ जये जगद श्वर संभु मंदेश्वर चन्द्र मूकु त
 ति कोरे ॥ जये वरु वरु जये वरु मुख न त्रिपुर विना मि
 कोरे ॥ ५२ ॥ तिरष त्रिपुंदर जता धर सुन्दर भुजंग राम
 हारे ॥ सिर मुनि वंदन दु रित निखन्दन हर हर नाम
 का कोरे ॥ भुति वी ल विलो ल न प न न श्र य गं वहि दु
 रि वारे ॥ सब सुष साधन कारन निर्मल ज्योति रूप य
 व तारे ॥ ५३ ॥ गिरिवर नन्दिनि संग सदा शिव सो व

कहि तू दुलिन वारा: दौ कर जोर कहत सिव सं
भुमरे करत उधारे ॥ ८० ॥

३८ राग आर ॥ ० ॥ मेरा मन रा मना मंदो रा रा न को हि: दो रा
रा न को हिरे ति रा रा न को हि ॥ १ ॥ जा के शिर मार
म कुत मेरा पति सो हे: संख च न ग दा प द्य के टि
मात्त सो हे ॥ २ ॥ नो कर ज द्वादि ग यो ह म का क रे गि
अश व न उ प दे न प्रे म रा ज द्वादि ॥ ३ ॥ मेरे पि हा कि
दे स मे ह म न हि जाना ॥ मेरा प भु म ग न भ या प्रे म रा
ज द्वादि ॥ ३ ॥ ॥ ५ ॥ नो ६ ६

४० राग निगुं ॥ ० ॥ हे दि ल आ गे को न ये न हि ज्यो न
अ ने ग पे चा ना ॥ १ ॥ व कु त के मा या व कु त उ गे या व
कु त ह म ने स्वा या न र सो रं ग स व व कु त कि या हे ज्ञानि
वै न पा सो ॥ २ ॥ आ फ ने लि या तु म न हि जाना अ
ने ग तु म पे चा ना ॥ च र हि मि तर वै धि रं ह ह: व कु त
दु र पु तु मा या ॥ ३ ॥ आव त जा व त व कु त हो ग ई

तुम पर रहता अभिमानाः जग के लिला तुम नहि
जाओ अये आफ भुला जा ॥ ३ ॥ सम तो देखे सम
ता पा नां निर्गुन ज्ञान गाउ जा ॥ अ भये नन्द कि धरे
निसानि निर्गुन ज्ञान वषा ना ॥ ४ ॥ ॥

४१ राग नरसिंह मध्ये ॥ ॥ नरसिंह माहा प्रभु भारिरे ॥ ॥
हिरन्यकसेप माहा वल पाया सर्व देव श्रीहि प्रभु कोर ॥
ख वल गाये प्रह्लाद वा वेखे वा फोरि हार जं कु समारे ॥ २
जिन की नामा विगे अन्ध कु स पदु तेः जन्म जन्म वि
पा पदु ता वेगा ॥ ३ ॥ ॥

४२ राग भजन ॥ राम भजन को ग ठरिः श्री दो सु मर
को ग ठरि आ खिर हे भर जो ना हो राम ॥ ॥ ॥ वरे व
पेदि तपो सक पोतिः राम नाम विसै ना होः ॥ ता दि
राजा वरे पुरा ना दित को पा दि भुला ना हो ॥ ॥ स
रुले हो समुद्र प्रा नी दित को पा दि भुला ना होः का ल
कि श्री गे को हि न हि र ह्ये गा हं सा य क ला जा ना हो ॥ ॥

४६ रागाठपा ॥०॥ मेरा मन इ सरि गोविन्द जाना ॥ ५५ ॥ ध्रुव प्रहस
दवि भिषेनी नार दई के सु चरनि थान ॥ मेरा मन ॥०॥
रागा भजन

४७ रागा भजन ॥०॥ सिव सिव भजो और सब ते जो मन तव
हृमिले हरी जिको रागा ॥ ५६ ॥ खोवे भंगानु ज सिर गंग
करत फिरत सब ते जो नुरंगा ॥ ० ॥ गिरिजा रागा विभुति
रागा दस रुव जावे सिवना चोरंगा ॥ २ ॥ माये चन्द्र कुज
सिज भंगा करत फिरत सब ते जो नंगा ॥ ३ ॥ कैह कोरि
स मोगा भंगा देहे ते रिचरन को मन को संग सिव
को ॥ ४ ॥ ५५ ॥ १०१० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

४८ रागाठपा ॥०॥ हरि हरि बोलना हजो मे जिब जेह दिव
चोखे सुख समाधि हरा वदु निजो कु ठिर हे रासार
स्वस्ति श्री सदा चर स्वस्ति श्री सदा प्रसाज
स्वस्ति श्री सदा प्रसाज

सर्वतः प्रसिद्धिः सा हि निर्वर्णी लोको वा
अथ

अरुषध्या रत्नं शर्व उदे को ध्वकि
जो वासा ॥ २ ॥ र शो स श्रवण रति
नं अ न न को टि कोंट । त । र का र । र र र द द च ॥
न ॥ १ ॥ २ ॥ श श्रवण रति र श श्रवण रति
श्रवण रति र श श्रवण रति र श श्रवण रति
श श्रवण रति र श श्रवण रति र श श्रवण रति
॥ २ ॥

५२ एग विभा ॥ १ ॥ सपे ते लो करु ना द या त गं गा जि ॥
हे लो ह्य ते न लख पु स्पे ठि क न ता ल वि श्रो वे ग त न रं को
स्पे गं गा ति र द ॥ १ ॥ लो तो ले जं भा री ॥ स पु स लो ठा लि
भा री पा द्ये श्री त ले जु न वि ल का सि वा द ॥ २ ॥ का व
ह्य श्री त ले ॥ र नं जि त व द्रा या क पा म दु पृ थि ना र
य नं नं दे ते जि त ॥ ३ ॥ १ १ २ २

श्री

श्री शि लं कं तु श्री ग रो शो ज य ति त रा म
रा गः ॥ ६ ॥ रा त ज ले ज स ल क रि त ले ज म दे रों नं न

लघुसंज्ञा

रागः निगुणा ॥ ७ ॥ राम भजो मेरा भाई सुकल तो जिः रामः

इहो ॥ जो हि वाप माता माता वा वि चन्दु च वा तगा इ

५५ यापर कागा वल नैद वल लो व दि ना इहो ॥ १ ॥ रा

लघुसंज्ञा मुग धलि के क द्यदुद पिना इहो ॥ तो वा तना

तरो भाईः माता कहने आई हो ॥ २ ॥ राम ॥ जोतिरि आमुष

गल गा इहो ॥ जोतिरि आमुष फेरि के वेथे दुत न

॥ ३ ॥ मराम ॥ वात धरोतिरि आरो रोवे हंसाये कले जाव

५६ राग निगुणा ॥ ॥ ताल त्रिताल ॥ ॥ नित्य २ राम नाम वो लो संत

भाई ॥ दोपति के चिर धै चित्त ज को हू पाई ॥ मक्त हो के पम्या फेर

प्रहलाद को वचाये ॥ ग्रास परी कृत्तराज वंधु को हू पाई ॥ १ ॥ नित्य ॥

श्रीगणेशाय नमः मायादेविदुर्गेविर्गेभवानिशिवरानि

ज्ञानगन्ध्याः ज्ञानरूपा ज्ञानमन्त्रि प्रदायन्ति प्रकृतिज्ञानरूपा

चराडाः चराडरूपिणि ॥ भद्राभीमाय जैनानि जाहति

अप नागिरि आरुर्गाः ॥ २ ॥ वनासिनि ॥ चराडी का

मायादेविदुर्गेभवानि
जवारादेनिमोलवर
रनि ॥ ४ ॥ नमः

श्रीगणेशाय नमः मायादेविदुर्गेविर्गेभवानिशिवरानि

ज्ञानगन्ध्याः ज्ञानरूपा ज्ञानमन्त्रिप्रदायनिः प्रकृतितातरूपां
चराडाः चराडरूपिनि॥ भद्राभीमायाजनानि जाहवित
अपनागिरिजार्गाः दुर्गसुरविनासिनि॥ चराडीकाश्चमहा
ह्याभवानिभववत्सभा॥ तन्वातितातरूपांप्रचराजचराड
गान्तुर्गुन्ः॥ लिलसतचिह्नमुक्तेगुह्यनिः

मायादेविदुर्गेविर्गेभवानिशिवरानि
जन्मवादिनेमस्तवरनाभस्तक
रनि॥४॥ नमसिगोष्ट

माया

रामदास

देहे

श्रीगणेशाय नमः

॥ वागमतिकारतसनाकरम अननवाचक

मनभुलारेधाधुरावु ॥५॥ जन्मनपहोईनन्याए
रनपाउता ॥६॥ सुभु ॥७॥

श्रीगणेशाय नमः

माया

ॐ नमो रामनामहे ॥

नरना रयेन त्वादिभक्त्यरु

॥ अथि... त्वेदं रिणकं... सशभुतोदमा...
स्वस्ति श्री

॥ सप्तमि श्रीसदस्य ॥

भाइ काननरी लुटे

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

215

संज्ञा

स्वस्ति श्रीसर्वोपेमाजोगपत्यादिसकलपरागार्य

7

राजभा

सप्तश्री राको वनजो उपदिश कल्प २३

क सु य रा ज

2769

卷之四

五 五